विचार बिन्दु

उत्साह से बढ़कर कोई दूसरा बल नहीं है, उत्साही मनुष्य के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है। –वाल्मीकि

भारत विरोधी ताकतों के चंगुल में फंस रहा है बांग्लादेश

बांग्ला देश धीरे-धीरे भारत विरोधी ताकतों के चंगुल में फंसता जा रहा है। शेख हसीना सरकार को गिराने के बाद कट्टरपंथियों के हौसले बुलंद है। अगस्त में जब से शेख हसीना सरकार का तख्ता पलट हुआ, तब से भारत विरोधी ताकतों ने कब्जा जमाया है। मोहम्मद यूनुस की अगुवाई वाला बांग्लादेश भारत को आंख दिखा रहा है। वहां से भारत के खिलाफ बयान दिए जा रहे हैं। वहीं पाकिस्तान और चीन से अच्छे ताल्लुकात बनाए जा रहे हैं। शेख हसीना के खिलाफ वहां चले आंदोलन को पाकिस्तान का पूरा समर्थन हासिल था। इस आंदोलन में छात्रों के साथ, वहां की दक्षिणपंथी पार्टी बीएनपी के सदस्य भी थे। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने मुस्लिम कट्टरपंथी संगठन जमात-ए-इस्लामी पर लगी पाबंदी हटा दी है।

मोहम्मद यूनुस को अब जमात-ए-इस्लामी की कठपुतली के तौर पर देखा जाने लगा है। तख़्ता पलट के फौरन बाद ही बांग्लादेश की जेलों से कई कट्टरपंथी आतंकी रिहा कर दिए गए। निर्वाचित सरकार को गिराने के बाद कट्टरपंथी ताकतों ने खुलेआम हिन्दुओं और उनके पूजा स्थलों पर हमले शुरू कर दिए है। विदेश मंत्रालय ने खुलासा किया कि बांग्लादेश में साल 2024 में हिंदुओं के खिलाफ हिंसा के 2,200 मामले सामने आए। ये मामले पडोसी देश में शेख हसीना के नेतृत्व वाली अवामी लीग सरकार के गिरने के बाद सामने आए हैं। सरकार ने बताया कि इसी अवधि के दौरान पाकिस्तान में भी ऐसे 112 मामले सामने आए। साथ ही बांग्ला देश के वर्तमान शासकों ने पाकिस्तान से पींगे बढ़ानी भी शुरू कर दी है। इससे उनके खतरनाक इरादों का पत्ता चलता है। 1971 में जब बांग्लादेश डूब रहा था तो भारत ने अपना पैसे, हथियार और सैनिक दांव पर लगाकर उसकी रक्षा की और आजादी दिलाई। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तानी सेना ने बांग्ला देश की सेना को प्रशिक्षित करने का बीड़ा उठाया है। बांग्ला देश के निर्माता शेख मुजीबुर्रहमान की यादों और उनके स्मारकों को तहस नहस किया जा रहा है। ढाका में शेख मुजीबुर्रहमान की मूर्ति को तोड़ा गया और कई सार्वजनिक स्थानों पर लगी उनकी नेमप्लेट को हटाया गया। यही नहीं जॉय बांग्ला को अब राष्ट्रीय नारा नहीं माना जाएगा। मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली बांग्लादेशी सरकार ने इसे लेकर आदेश जारी किया है। बांग्लादेश के पहले राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान ने 1971 में बांग्लादेश के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इस नारे का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया था।

पाकिस्तान और बांग्ला देश में जब भी कोई सियासी घटनाक्रम होता है उस दौरान उपद्रवी कट्टरपंथी तत्व अल्पसंख्यकों पर सबसे पहले हमले शुरू कर देते है। दोनों मुस्लिम देशों में हिंदू आबादी हमेशा निशाने पर रही है। यही वजह है कि वहां साल-दर-साल हिंदुओं की आबादी घटती जा रही है। विशेषकर हिन्दू और हिंन्दू मंदिर उनके निशाने पर होते है। हम बात कर रहे है बांग्ला देश के सियासी घटनाक्रम पर जहां प्रधान मंत्री शेख हसीना के इस्तीफा देकर भागने के बाद देश के अंदर हिंदुओं के ऊपर अत्याचार शुरू हो गया है।

बांग्लादेश में जगह-जगह पर हिंदू मंदिरों और हिंदू समुदाय पर हमले की खबरें आ रही हैं। मीडिया रिपोर्ट से पता चलता है कि हिंदुओं के घरों और मंदिरों को निशाना बनाया गया है। इस्कॉन और काली मंदिर पर हमले हुए हैं, जिसके बाद हिंदुओं को जान बचाने के लिए छिपना पड़ा है। रिपोर्ट के मुताबिक, हिंदुओं को घरों से निकाल कर पीटा जा रहा है। उनकी दुकानों में लूटपाट की जा रही है। रंगपुर से हिंदू काउंसलर काजल रॉय की उपद्रवियों ने हत्या कर दी। बांग्लादेश में हिंदुओं पर सालों से हमले होते आ रहे हैं। हिंदुओं के मंदिर, घर, दुकानों, पांडाल में तोड़फोड़ और लूटपाट की खबरें सामने आती रही हैं। हिन्दू इलाकों में भयावह चीख पुकार मची है कि उसे सुनने वालों के रोंगटे खड़े हो जाएं। खौफ में जी रहे हिन्दू सवाल पूछ रहे हैं कि वो जाए तो कहां जाएं। कट्टरपंथियों ने हिन्दुओं के घरों में ऐसी तबाही मचाई की पीड़ित परिवार रोते-बिलखते दिखे। बांग्लादेश में कई जगहों पर हिन्दुओं के रिहायशी इलाके में भीड़ ने हमला कर दिया, इस दौरान हिन्दुओं के घरों को जला दिया गया और जमकर तोड़फोड़ की गई। जिसके बाद हिन्दू समुदाय वहां अपनी जान की हिफाज़त की गुहार लगाता नज़र आया। इससे पहले भी बांग्लादेश में इस्कॉन मंदिर और हिंदुओं पर हमले के कई मामले सामने आ चुके हैं। सरकार और प्रशासन हमलावरों के खिलाफ कोई सख्त कार्यवाही अमल में लाने पर नाकारा साबित होते है जिससे हमलावरों के हौसले बुलंद होते है। बांग्लादेश में 1 करोड़ 30 लाख की हिन्दू आबादी बताई जा रही है।

पाकिस्तान और बांग्ला देश दोनों ही इस्लामिक देश है। दोनों ही देशों में कट्टरपंथी ताकतें शासन प्रशासन पर हावी है। इन दोनों इस्लामिक देशों में हिन्दू अल्पसंख्यक है जिन पर आये दिन हमले होते रहते है। हिन्दुओं के धार्मिक स्थलों को भी लगातार निशाना बनाया जाता है। आज़ादी के बाद पाकिस्तान और बांग्ला देश में सैंकड़ों हिन्दू मंदिरों को नेस्तनाबूद कर दिया गया।

पाकिस्तान और बांग्ला देश दोनों ही इस्लामिक देश है। दोनों ही देशों में कट्टरपंथी ताकतें शासन प्रशासन पर हावी है। इन दोनों इस्लामिक देशों में हिन्दू अल्पसंख्यक है जिन पर आये दिन हमले होते रहते है। हिन्दुओं के धार्मिक स्थलों को भी लगातार निशाना बनाया जाता है। आज़ादी के बाद पाकिस्तान और बांग्ला देश में सैंकड़ों हिन्दू मंदिरों को नेस्तनाबूद कर दिया गया। दोनों ही इस्लामिक देशों में हिंदू संस्कृति संकट में है। हाल यह है कि हिंदुओं को मंदिरों में पूजा करने के लिए भी संघर्ष करना पड़ रहा है। इन देशों में अल्पसंख्यक की महिलाओं के साथ रेप, मर्डर जैसी घटनाएँ आए दिन सामने आती रहती हैं।

अल्पसंख्यकों की जिंदगी पाकिस्तान और बांलादेश दोनों में नर्क है। यहां पर आए दिन हिंदू परिवारों के साथ उत्पीड़न का मामला आता रहता है। हिंदूओं को जबरन इस्लाम कबूल करने पर मजबूर किया जाता है। हिंदू बेटियों का धर्म परिवर्तन कर जबरन मुस्लिम पुरुषों से निकाह कराया जाता है। आए दिन हिंदू लड़कियों के साथ रेप के मामले सामने आते रहते हैं। विभाजन के समय पाकिस्तान में 23 प्रतिशत हिंदू-सिख थे आज घटकर 2 प्रतिशत बचे हैं।

बांग्लादेश में भी अब पाकिस्तान जैसे हालात उत्पन्न होते जा रहे हैं। एक स्टडीज के मुताबिक बांग्ला देश में 1951 में हिंदुओं की आबादी 23 प्रतिशत थी, जो 2017 में घटकर 9 फीसदी रह गई। अब तो ओर भी कम हो गई है। बांग्लादेश मानवाधिकार संगठन ऐन ओ सलीश केंद्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक, 2013 से 2021 तक बांग्लादेश में हिंदुओं को निशाना बनाते हुए 3600 हमले हुए। इस दौरान हिंदू महिलाओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न के कई मामले भी सामने आए। एक आंकड़े के मुताबिक बीते समय बांग्लादेश में 150 से अधिक हिंदू मंदिरों को निशाना बनाया गया था। इस स्टडी के अनुसार, इन 10 वर्षों के दौरान हिंदुओं के खिलाफ हमलों में एक हज़ार से अधिक घरों और 600 दुकानों और व्यवसायों को निशाना बनाया गया और उनमें तोड़फोड़ और आगजनी की गई। इस दौरान हिंदू मंदिरों, मूर्तियों और पूजा स्थलों में तोड़फोड़ और आगजनी के दो हज़ार से अधिक मामले दर्ज किए गए। ऑल पाकिस्तान हिंदू राइट्स मूवमेंट के एक सर्वे के अनुसार, साल 1947 में जब भारत-पाकिस्तान अलग हुए तो पाकिस्तान के हिस्से में 428 मंदिर मौजूद थे। मगर 1990 के बाद इनमें 408 मंदिरों को रेस्टोरेंट, होटल, दफ्तर, सरकारी स्कूल या मदरसे में तब्दील कर दिया गया। पाकिस्तान में अब केवल 22 हिंदू मंदिर ही बचे हुए हैं।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

मिट्टी और धूल का जटिल रिश्ता

मां अक्सर कहा करती थी, जहाँ के पेड़-पौधे पहचान में आने बंद हो जाये, वहाँ आदमी पराया हो जाता है। जब मैं छोटा था, यह बात मुझे बस एक साधारण सी कहावत लगती थी। लेकिन आज, जब मैं उनकी ज़िंदगी को देखता हूँ, तो यह समझ आता है कि मिट्टी और धूल का रिश्ता कितना जटिल और गहरा है।

मां की अपनी मिट्टी दिल्ली थी। वहीं उनका जन्म हुआ, वहीं उनकी पहचान बनी। दिल्ली सिर्फ एक शहर नहीं था, वह उनकी आत्मा का हिस्सा था। अंग्रेज़ी अखबार पढ़ना, आधुनिक सोच रखना, और अपने लिए सही निर्णय लेना उनकी खासियत थी। इतनी आत्मनिर्भर थीं कि मेरे छोटे शहर के वेटरनरी डॉक्टर पिता को शादी के लिए पहली बार में मना कर दिया था-उन दिनों यह असाधारण बात थी। लेकिन जब शादी हुई और उनका जीवन बीकानेर जैसे छोटे शहर की ओर मुड़ा, तो उनकी पूरी दुनिया ही बदल गई।

बीकानेर उनके लिए एक पराई जगह थी। दिल्ली की चहल-पहल और आधुनिकता से दूर, यह एक शांत, रूढ़िवादी शहर था। लेकिन मां ने धीरे-धीरे इसे अपनाया। हालाँकि, यह यात्रा आसान नहीं थी। मेरे दादाजी, जो हमारे साथ रहते थे, बेहद नियंत्रक स्वभाव के थे। मां को बीकानेर में रहकर उनकी देखभाल करनी पड़ी, जबकि पिता काम के सिलसिले में गाँवों और कस्बों में समय बिताते थे। घर में छोटी बहू होने के कारण, उन्हें जेठानी की सामाजिक ताकत और आर्थिक साधनों के आगे अक्सर झुकना पड़ता था।

फिर भी, मां ने अपनी पहचान बनाई। शायद उनके अपने बेटों की मां बन जाना उनकी सबसे बड़ी जीत थी। या शायद, यह उनका सबसे बड़ा अफसोस। उन्होंने बीकानेर में अपना घर बसाया, हमारे लिए एक सुरक्षित दुनिया बनाई और हर वह जिम्मेदारी निभाई, जो एक निम्न-मध्यमवर्गीय महिला से अपेक्षित होती है। लेकिन जिस घर में उन्होंने खुद को एक नींव की तरह स्थापित किया था, वहाँ भी उनका नियंत्रण एक तरफा था।

मां का स्नेह उनके पति के अस्पताल के स्टाफ तक ज़्यादा फैला लेकिन इस स्नेह के पीछे एक गहरी नियंत्रण की प्रवृत्ति भी थी। समय-समय पर बदलते सहायक उनकी दिनचर्या का हिस्सा बन गए थे, लेकिन मां का उनके साथ व्यवहार अक्सर कठोर होता था। शायद यह उनकी अपनी असुरक्षाओं और उन सामाजिक अन्यायों की प्रतिक्रिया थी, जो उन्हें छोटी और कम साधन-सम्पन्न बहू होने के कारण झेलने पड़े। जिन रिश्तों ने मां को सबसे अधिक प्रेम और सम्मान दिया, वहाँ भी एक दूरी बनी रही। हमारा समाज भी ख़ून के रिश्तों का कुछ ज़्यादा ही पिछलग्गू है।

धीरे-धीरे बीकानेर मां की मिट्टी बन गया। उन्होंने वहाँ की जड़ों में खुद को पूरी तरह समा लिया था। यह शहर उनके अस्तित्व का हिस्सा बन गया। लेकिन यह स्थिरता तब तक कायम रही, जब तक पिता जीवित थे। उनके जाने के बाद, बीकानेर की मिट्टी उनके लिए दरकने लगी। वह घर, जो कभी उनका आश्रय था, अब उन्हें एक चौराहे पर खड़ा कर गया। हम दोनों भाई, जो पहले से ही अमेरिका में थे, उनके जीवन का अगला कदम तय करने लगे। मां के पास अब भारत में टिके रहने का कोई साधन नहीं बचा था। उनका जीवन अब एक नई दिशा में बढ़ रहा था-धूल बनने की ओर। जब मां अमेरिका आईं, तो हमने उन्हें हर संभव आराम देने की कोशिश की। बड़े घर, बेहतर सुविधाएँ, और परिवार का साथ। लेकिन उनके मन में हमेशा एक खालीपन था। उनके आसपास लोग थे, लेकिन वह समुदाय नहीं, जिसकी वह आदी थीं। अमेरिका का समाज, जहाँ रिश्तों में बराबरी का भाव अधिक है, मां के लिए अजनबी था। कभी-कभी मुझे लगता है कि यह मेरा भ्रम था, लेकिन मां के चेहरे पर वह अपनापन और वह जुड़ाव कभी नहीं दिखा। भारतीय समाज में बहू और सास का रिश्ता अक्सर बेटे या पति को जीतने की होड़ में उलझ जाता है। जो रिश्ता प्यार और सम्मान पर आधारित होना चाहिए, वह अधिकार और नियंत्रण की लड़ाई में बदल जाता है। यहाँ अमेरिका में जहाँ बड़ों से रिश्ते अक्सर न तो अधिकार की मांग करते हैं और न ही नियंत्रण की, मां का मन अपनी पुरानी सामाजिक ढाँचों की पहचान को कहीं खोया हुआ महसूस तो करता होगा। अमेरिका में मां धूल की तरह उड़ती रहीं-कभी मेरे पास, कभी मेरे भाई के पास। वह हर बार बसने की कोशिश करतीं, लेकिन धूल का स्वभाव यही है-वह कहीं टिकती नहीं। पिछले साल हमने मां को दिल्ली के पास एक सीनियर लिविंग होम में शिफ्ट किया। यह निर्णय हमारे लिए मुश्किल था, लेकिन हमने सोचा कि शायद यह उनके लिए राहतभरा होगा। उनकी अपनी मिट्टी-उनकी भाषा, उनका भोजन, उनका माहौल-सब कुछ फिर से उनके पास था।

पर शायद यह बहुत देर से हुआ। उनकी बिगड़ी हुई आँखें, कमज़ोर शरीर और समाज से कटा हुआ जीवन-शायद यह सब उन्हें पूरी तरह से इस नई जगह से जुड़ने नहीं दे पाया। वह हमेशा कहतीं, यह घर नहीं है, लेकिन जब उन्हें वापस घर लाने का विकल्प दिया गया, तो उन्होंने इनकार कर दिया। ऐसा लगा, जैसे वह खुद को धूल बनने और अंततः मिट्टी में लौटने के लिए तैयार कर रही थीं। यह घर उन्हें सहारा देता था, लेकिन वह कभी पूरी तरह से अपना नहीं बना सकीं।

चार महीने। बस चार महीने। मां दिल्ली की मिट्टी में लौटीं और फिर उसी मिट्टी का हिस्सा बन गईं। उनकी अचानक मृत्यु ने हमें झकझोर कर रख दिया। आज जब मैं उनकी ज़िंदगी को पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो सोचता हूँ कि सही क्या था, और ग़लत क्या। क्या मां को कभी अमेरिका लाना ही नहीं चाहिए था? क्या उन्हें बीकानेर में ही रहने देना चाहिए था, जहाँ वे मिट्टी बन चुकी थीं? या यह सब नियति का खेल था, जिसमें मां को मिट्टी से धूल और फिर धूल से मिट्टी बनना ही था? मिट्टी स्थिरता देती है, वह जुड़ाव देती है। धूल स्वतंत्रता देती है, नए अनुभव देती है। लेकिन धूल का एक अकेलापन है। वह बहती रहती है, पर कहीं टिक नहीं पाती। मां ने दोनों जिंदगियाँ जीं। बीकानेर में मिट्टी बनकर उन्होंने एक परिवार को सींचा। अमेरिका में धूल बनकर उन्होंने अपने बच्चों के लिए वह बलिदान दिया, जो शायद हर मां करती है। लेकिन अंत में, उनका मन हमेशा अपनी मिट्टी के लिए तड़पता रहा।

शायद हर धूल को अपनी मिट्टी में लौटने का रास्ता मिलना चाहिए। मां की कहानी ने मुझे यह सिखाया कि जुड़ाव और स्थिरता इंसान को आखिर तक सुकून देती है। धूल भले ही उड़ने के लिए स्वतंत्र हो, लेकिन अंततः मिट्टी ही उसे थाम लेती है।

–डॉ. पंकज राजवंशी,
सिएटल (अमरीका) में एक गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट है

केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने काजरी शोध क्षेत्रों का भ्रमण किया

जोधपुर, (कासं)। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने काजरी शोध क्षेत्रों का भ्रमण किया तथा वैज्ञानिकों से संवाद किया। उन्होंने समन्वित कृषि कैफेटेरिया फलोउद्यानिकी, परिशुद्ध कृषि ब्लाक तथा काजरी फार्म में लगी विभिन्न फसलों, पेड़-पौधे, कृषि तकनीकियों के बारे में वैज्ञानिकों से विस्तार से जानकारी ली।

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने काजरी का दौरा किया।

इस दौरान उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संकल्प किसानों की आय को बढ़ाना है। खेती से किसान को अच्छी आय हो और देश में अनाज, फल आदि के भण्डार भरे रहे, इसके लिए आईसीएआर काम कर रही है। उन्होंने कहा कि किसानों को खेती से मुनाफा बढ़ाने के लिए उन्हें जल्दी पकने वाली, कम समय, कम पानी की आवश्यकता वाली, लागत कम और मुनाफा अधिक हो ऐसी किस्में उपलब्ध करवायी जा रही है, ताकि किसान की आय बढ़े। कृषि मंत्री ने कहा कि खेती में लाभ अर्जित के लिए कृषि में विविधिकरण होना आवश्यक है। मुझे खुशी है कि काजरी संस्थान में जो समन्वित कृषि कैफेटेरिया एवं विभिन्न कृषि प्रणालियों के मॉडल विकसित किये हैं वो वर्षभर आमदनी के दृष्टि से फायदेमंद है। उन्होंने हाइड्रोपोनिक एवं एरोपोनिक सिस्टम के बारे में जानकारी ली और कहा कि संरक्षित खेती के क्षेत्र में संस्थान में अच्छा शोध कार्य हो रहा है। कम लागत के नेट हाउस के उपयोग को और बढ़ावा देना चाहिए तथा पढे लिखे युवाओं को इससे जोड़ना चाहिए। उन्होंने बेर टमाटर, चैरी टमाटर, अमरूद एवं बाजरा लड्डू का जायका भी लिया।

केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने वैज्ञानिकों के साथ बैठक ली तथा किसानों से संवाद किया। उन्होंनें कृषि की नवीन तकनीकियों एवं संस्थान के शोध कार्यों को सराहा तथा संस्थान के निदेशक डॉ. ओ.पी. यादव एवं वैज्ञानिकों को बधाई दी। शहर विधायक अतुल भंसाली ने कहा कि मारवाड़ में बारिश कम होती है। काजरी ने कम पानी में अच्छी उपज देने वाली किस्में विकसित की है जिससे किसान लाभान्वित हुआ है। काजरी निदेशक डॉ. ओ.पी. यादव ने संस्थान की गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि कृषि के विकास एवं खेती से मुनाफा हो किसानों की आय बढ़ाने के लिए नवीन तकनीकियों नवीन किस्में, नवीन कृषि प्रणालियों सौर उर्जा के उपयोग तथा गावों में तकनीकी हस्तांतरण के द्वारा किसानों की आय बढ़ाने के सफल प्रयास किये गये हैं। देश का प्रथम एग्रो वोल्टिक प्रणाली मॉडल यहां विकसित किया गया है, जिससे बिजली उत्पन्न होती है, फसल होती है एवं पानी संग्रहण भी होता है। संस्थानों को कृषि के शोध क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय योगदान के आईसीएआर के सात अवार्ड से नवाजा जा चुका है।

- **शिवराज सिंह चौहान ने बेर टमाटर, चैरी टमाटर, अमरूद एवं बाजरा लड्डू का जायका भी लिया**

इस मौके पर विभागाध्यक्ष डॉ. एसपीएस तंवर, डॉ. पी. सान्तरा, डॉ. आर.के. कांकाणी, डॉ. पी.आर. मेघवाल, डॉ. आर.एन. कुमावत, पीएमई प्रभारी डॉ. पीसी महाराणा, डॉ. प्रदीप कुमार, वित्त नियंत्रक सुनीता आर्य उपस्थित रहे। वहीं राष्ट्रीय सचिव किसान मोर्चा शेलाराम सारण भी उपस्थित थे।

पैंथर ने आबादी क्षेत्र में गाय को शिकार बनाया

कानोड़, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम पंचायत अकोला के पीपलवास रोड जलेबी रोयण फले में आबादी क्षेत्र में घुसे पैंथर ने गाय पर हमला कर उसे अपना शिकार बनाया।

गाय मालिक लोगर पुत्र वजेराम मीणा, निवासी पीपलवास ने बताया कि गाय उनके मकान के पास बने बाड़े में बंधी थी। दिन में करीब चार बजे पैंथर ने गाय पर हमला कर दिया, आवाज सुनकर उनका पुत्र बाहर आया और डर के मारे जोर-जोर से चिल्लाने लगा। रोने की आवाज सुनकर काफी संख्या में ग्रामीण मौके पर एकत्र हो गए और लकड़ी व पत्थर मारकर पैंथर को मौके से भगाया। गनीमत रही कि पैंथर ने मकान के बाहर मौजूद बच्चे व किसी पुरुष पर हमला नहीं किया व समय रहते ग्रामीणों ने पैंथर को भगा दिया वरना जनहानि हो सकती थी। ग्रामीणों ने घटना की जानकारी वन विभाग को दी, लेकिन देर शाम तक विभाग का कोई कर्मचारी मौके पर नहीं पहुंचा।

पैंथर की लगातार पीपलवास क्षेत्र में मूवमेंट देखी जा रही है। बीते लंबे समय से कई बार पैंथर आबादी क्षेत्र में आकर जानवरों को शिकार बना चुका है। बीते एक सप्ताह में तीसरी घटना को अंजाम देते हुए एक गाय को मार दिया। चार दिन पूर्व भी पैंथर ने हमला करते हुए आबादी क्षेत्र एक बाड़े में बंधे दो बकरों को अपना शिकार बनाया था। बीते लंबे समय से वन विभाग अधिकारी व कर्मचारियों की क्षेत्र की घटनाओं पर कोई नजर नहीं दिख रही है।

ग्रामीणों में बताया कि लगातार विभाग अधिकारियों को सूचना देने के बावजूद मौके पर कोई नहीं पहुंचता, जिससे उन्हें डर बना हुआ है। शुक्रवार को भी ग्रामीणों ने विभाग के स्थानीय वनपाल को दूरभाष पर बताया लेकिन देर शाम तक विभाग का कोई कर्मचारी मौके पर नहीं पहुंचा।

- **गनीमत रही कि पैंथर ने मकान के बाहर मौजूद बच्चे व किसी पुरुष पर हमला नहीं किया**
- **ग्रामीणों ने मौके पर एकत्र होकर लकड़ी व पत्थर मारकर पैंथर को भगाया**

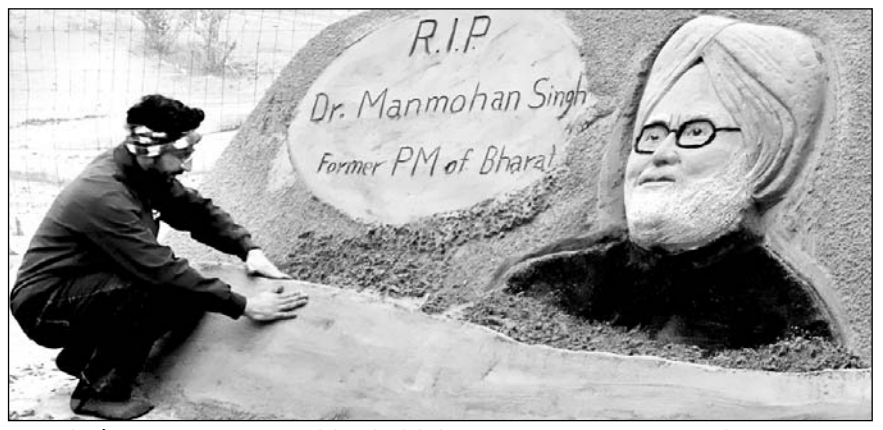

पुष्कर के सैंड आर्टिस्ट अजय रावत ने रेतिले धोरों में मिट्टी की प्रतिमा बनाकर भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि दी।

आयोग ने वर्ष 2025 में प्रस्तावित परीक्षाओं का कार्यक्रम जारी किया

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा वर्ष 2025 के जनवरी से दिसंबर माह तक आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं का प्रस्तावित कार्यक्रम जारी किया गया है। कार्यक्रमानुसार जनवरी से दिसंबर माह तक 31 भर्तियों के अन्तर्गत कुल 162 परीक्षाओं का आयोजन किया जाएगा। इसमें आयोग द्वारा 210 प्रश्नपत्रों की परीक्षाओं का आयोजन 80 दिवसों में किया जाएगा।

आयोग की परीक्षाओं के संदर्भ में विगत समय से अभ्यर्थियों की अपेक्षा रही है कि संघ लोक सेवा आयोग की भांति राजस्थान लोक सेवा द्वारा भी भर्ती परीक्षाओं का कैलेण्डर जारी किया जाए ताकि परीक्षार्थियों को परीक्षा की तैयारी हेतु समुचित समय मिल सके। इसी के दृष्टिगत आयोग द्वारा परीक्षा की प्रस्तावित परीक्षा दिनांक विज्ञापन के साथ अथवा कुछ समय के बाद ही जारी करते हुए नियत कार्यक्रमानुसार परीक्षाओं के आयोजन का प्रयास किया जा रहा है। आयोग द्वारा वर्ष 2025 में प्रस्तावित परीक्षाओं के कार्यक्रम में 10 भर्ती परीक्षाओं की पूर्व में प्रस्तावित दिनांक में संशोधन एवं 7 अन्य भर्ती परीक्षाओं की प्रस्तावित परीक्षा तिथि को सम्मिलित किया गया है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 28 दिसम्बर, 2024

पौष मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, अनुराधा नक्षत्र रात्रि 10:13 तक, शूल योग रात्रि 10:23 तक, गर करण दिन 3:00 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भद्रा रात्रि 3:33 से आरम्भ होगी। शुक्र कुम्भ राशि में रात्रि 11:40 पर प्रवेश करेगा। आज शनि प्रदोष व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:36 से 9:53 तक, चर 12:28 से 1:46 तक, लाभ-अमृत 1:46 से 4:20 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:19, सूर्यास्त 5:38

मेष
पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

वृश्चिक
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
घर-गृहस्थी के खर्चों पर नियंत्रण रखें। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।